B-2
L-12

दिनांक
08-11-23

1857 का महा विद्रोह

महत्वपूर्ण बिन्दु -:

1- विद्रोह बनाम आन्दोलन -:

किसी विशिष्ट क्षेत्र में सामान्यतः सीमित उद्देश्यों के लिए किया गया विरोध विद्रोह कहलाता है। किसी व्यक्ति या समूह के द्वारा अन्याय या उत्पीड़न के विरुद्ध हिंसक या अहिंसक प्रतिक्रिया विद्रोह कहलाती है किन्तु राजनैतिक विरोध सामान्यतः हिंसक विद्रोहों को जन्म देता है। व्यापकता के दृष्टिकोण से इसे आन्दोलन की तुलना में सीमित माना जाता है।

आन्दोलन के लिए नेतृत्व, संगठन व विचारधारा को आवश्यक माना जाता है तथा आन्दोलन की सफलता जनता की भागीदारी पर भी निर्भर करती है। विद्रोह मांगों को तुरंत पूरा करने पर बल देता है। तो वहीं आन्दोलन क्रमिक सुधारों की मांग करता है। और सामान्यतः आन्दोलन का उद्देश्य व्यापक माना जाता है।

KGS IAS
KHAN SIR

→ 1857 के महाविद्रोह के पहले के प्रमुख विद्रोह :-

- औपनिवेशिक शासन की स्थापना के साथ ही उनकी शोषण पूर्ण कार्यवाही के कारण अनगिनत किसान व जनजातीय विद्रोह होते रहे जिनमें 1775 का सन्यासी विद्रोह, 1831 का कोल विद्रोह, 1837-1856 तक खोण्ड विद्रोह और 1855-56 का सन्थाल विद्रोह सिद्ध करता है कि अंग्रेजो की अन्यायपूर्ण गतिविधियों से नाराज होकर किसानों और जनजातियों ने प्रभावी विद्रोह किये।

- 1817 में बख्शी जगबन्धु के नेतृत्व में ओडिसा का पाइक विद्रोह चर्चित रहा, वस्तुतः ये पाइक ओडिशा के शासक के साथ मिलीशिया / निजी सेना के रूप में कार्य करते थे जो युद्ध के समय में सैनिक तथा सामान्य स्थिति में पुलिस की भूमिका निभाते थे।

इन्होंने भगवान जगन्नाथ को ओडिशा की एकता का प्रतीक मानकर ईस्ट इण्डिया कंपनी के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और यह इतना प्रभावी साबित हुआ कि कुछ विद्वान इसे भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम कहते हैं।

- 1857 के महाविद्रोह के कारण :-

- 1757 में प्लासी की विजय के बाद अंग्रेजों ने अपने स्वार्थों की पूर्ती के क्रम में भारतीय पक्षों का इस कदर शोषण किया कि हमारा धर्म, मान, जीवन व सम्पत्ति सभी खतरे में पड़ गया अर्थात औपनिवेशिक शासन प्रणाली

के 100 वर्षों के भीषण उत्पीड़न ने एक ऐसी पृष्ठभूमि तैयार कर दी कि ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध महाविद्रोह स्वभाविक हो गया।

राजनैतिक कारक :-

(a) साम्राज्य विस्तार की अकांक्षा ने ब्रिटिश साम्राज्य को भारतीय रियासतों के विलय को बढ़ावा दिया और साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षा से प्रेरित होकर डलहौजी ने व्यपगत सिद्धांत / हड़प नीति के द्वारा क्रमशः सतारा, जैतपुरा, झांसी व नागपुर जैसी रियासतों के विलय की घोषणा की तथा जब अवध जैसी सम्पन्न रियासत इस नीति के तहत न हड़पी जा सकी तो अवध के नवाब पर कुशासन का आरोप लगाकर 1856 में इसके विलय की घोषणा की, जिसने यह तय कर दिया कि अंग्रेजों के लिए नीति, नियम या नैतिकता का कोई महत्व नहीं है वे केवल साम्राज्य विस्तार से प्रेरित हैं। अतः भारतीय राजनैतिक शक्तियां अपने अस्तित्व व प्रतिष्ठा को बचाने के लिए विद्रोही हो उठी।

(b) मुगल सम्राट बहादुरशाह जफर के उत्तराधिकारियों को राजनैतिक पदवी से वंचित करने की घोषणा स्पष्ट कर देती है कि अब अंग्रेज भारत को पूरी तरह अपने नियंत्रण में लेना चाहते हैं " यह एक भावनात्मक प्रहार था जो ऐतिहासिक मुगल सत्ता को ध्वस्त कर देना चाहता था।

(c) क्षेत्रीय राजाओं की रियासतें छीनने के साथ ही उनके अधिकारों व सम्मान में कमी किये जाने से भी राजनैतिक असंतोष उभरने लगा था उदाहरणत: नाना साहब की पेंशन को रोका जाना।

- आर्थिक प्रशासनिक कारक :

- औपनिवेशिक शासन प्रणाली ने भारतीय संसाधनों का इस कदर शोषण किया कि सोने की चिड़िया कहलाने वाला भारत अब गरीबी, बेरोजगारी व अकालों की बारम्बारता से जूझने लगा और प्राया सभी वर्गों का जीवन यापन कठिन हो गया। स्मरणीय है कि इसी सन्दर्भ में 1857 से पहले भी कृषक व जनजातीय विद्रोह भी होते रहे थे किन्तु अब स्थिति ने विस्फोटक रूप धारण कर लिया और अपनी स्थिति में बदलाव के लिए लोगों को विद्रोह करना स्वभाविक लगने लगा।

KGS IAS KHAN SIR

अंग्रेजों ने Rule of Law (विधि का शासन) के तहत प्रशासनिक एकीकरण तो किया किन्तु भारतीय परम्पराओं एवं रीति-रिवाजों का ध्यान नहीं रखा जिससे अंग्रेजों द्वारा किये गये इन बदलावों के कारण परम्परागत भारतीयों में विद्रोह की भावना पनपने लगी और साथ ही अंग्रेजों ने अपने लाभ के लिये जिस यातायात, संचार व्यवस्था तथा प्रशासनिक एकीकरण को स्थापित किया था उसने भारतीयों के मध्य सम्पर्क स्थापना को सहज बनाया इसीलिए विद्रोही भावना भारत के विस्तृत क्षेत्र में प्रसारित होने लगी।

- सामाजिक-धार्मिक कारक :

- ब्रिटिश शासन द्वारा नवोदित शिक्षित मध्यम वर्ग की सहायता लेने और उपयोगितावादी न्यायप्रियता को प्रदर्शित करने के लिए भारतीयों के सामाजिक-धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप किया जाने लगा उदाहरणतः 1829 में सती प्रथा निषेध तथा 1856 में विधवा पुनर्विवाह अधिनियम को लाया गया, यह भारतीयों को अपने सामाजिक-धार्मिक मामलों में विदेशी हस्तक्षेप महसूस हुआ।

- 1813 के अधिनियम से ईसाई धर्म प्रचारकों को भारत आने की छूट दिये जाने से धर्मान्तरण को बढ़ावा मिला और इसी क्रम में जब 1850 में धार्मिक अयोग्यता अधिनियम लाया गया, जिसके तहत धर्म परिवर्तन के बावजूद पैतृक सम्पति में अधिकार बने रहने का प्रावधान किया गया जो स्पष्टतः धर्मान्तरण को बढ़ावा दे रहा था और अब भारतीयों का धैर्य जवाब देने लगा।

- अंग्रेजों ने अपनी नस्लीय श्रेष्ठता को बनाये रखा और वे भारतीयों के चरित्र पर अपमानजनक टिप्पणी करते रहे। इसे में हिन्दू व मुस्लिम दोनों ही वर्गों को यह महसूस हुआ कि यदि अब विरोध नहीं किया गया तो पाश्चिमी सभ्यता भारतीय संस्कृति को आच्छादित कर लेगी।

- सैन्य कारक :-

- भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना व विस्तार में भारतीय सैनिकों की भूमिका महत्वपूर्ण थी लेकिन ब्रिटिश नीतियों से इन सैनिकों में निरंतर असंतोष बना रहा इसीलिए 1806 से 1857 के मध्य विभिन्न सैनिक विद्रोह हुए।

- हिन्दू व मुस्लिम सैनिकों के धार्मिक प्रतीकों व चिन्हों के प्रयोग को प्रतिबंधित किये जाने, योग्यता के बावजूद उच्च पद न दिये जाने, तुलनात्मक रूप से कम वेतन तथा भारतीय सैनिकों के धर्म, समाज व नस्ल के बारे में अपमान जनक टिप्पणी करते रहना सैन्य असंतोष को विद्रोही बना रही थी।

- लॉर्ड कैनिंग के समय सामान्य सेवा भर्ती अधिनियम लाया गया जिसके तहत भारतीय सैनिकों को ब्रिटिश शासन कहीं भी और कभी-भी युद्ध के लिए भेज सकता था जबकि भारत की सामाजिक-धार्मिक मान्यताओं में प्रतिबंधित क्षेत्र की संकल्पना थी और वस्तुतः ये सैनिक वर्दी वाले किसान ही थे।

- तात्कालिक कारक :-

- चर्बी वाले कारतूस के प्रयोग की चर्चा ने हिन्दू व मुस्लिम दोनों वर्गों के सैनिकों की भावनाओं को गंभीरता से आहत किया और मंगल पांडे के नेतृत्व में जब सैन्य विद्रोह उभरा तो शीघ्र ही पिछले 100 वर्षों से जमा हो रहे असंतोष रूपी बारूद में इस घटना ने चिंगारी

का काम किया और ऐतिहासिक 1857 का महाविद्रोह धरातल पर आ गया।

प्रश्न- क्या यदि चर्बी वाले कारतूस की घटना न होती तो 1857 का विद्रोह भी ना हुआ होता?

↳ होता - किन्तु → इसकी तिथि, दशा व दिशा कुछ और होती।

1857 के महाविद्रोह सम्बंधित महत्वपूर्ण तथ्य -:

- यह स्वार्थी सैनिकों का विद्रोह था —— शीले
- यह हिन्दू-मुस्लिम षड़यंत्र था — आउट्रम व टेलर
- यह सभ्यता व बर्बरता के बीच का संघर्ष था - TR होम्स
- यह राष्ट्रीय विद्रोह था —— डिजराइली (ब्रिटेन मे विपक्षी दल का नेता)
- भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम - वी डी सावरकर
- न तो प्रथम न राष्ट्रीय और न ही स्वतंत्रता हेतु संग्राम था ——→ RC मजूमदार

विशेष-:

- 1857 के विद्रोह पर भारत सरकार के आधिकारिक इतिहासकार S.N सेन जिन्होने "1857" नामक पुस्तक लिखी और इसे राष्ट्रीय भावना के अभाव में स्वतंत्रता संग्राम बताया और इस विद्रोह की तुलना आंधी से की।

KGS KHAN GLOBAL STUDIES IAS
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

- विद्रोह के समय सर सैयद अहमद बिजनौर में सदर अमीन के पद पर थे और इन्होंने "The Causes of Indian mutiny" नामक पुस्तक लिखी और इसे सैन्य विद्रोह बताया।

- 29 मार्च को बैरकपुर छावनी मे मंगल पांडे ने विद्रोह की शुरुआत की और इस महान विद्रोह के प्रथम सहीद बने।

इसी क्रम में जब मेरठ छावनी में सैनिकों ने विद्रोह किया और उन्हें सजा सुनायी गयी तो 9 मई को यह महाविद्रोह आरम्भ हो गया और सैनिकों ने दिल्ली आकर बहादुरशाह जफर को विद्रोह का नेता घोषित कर दिया जिससे विद्रोह का स्वरूप भारतीय हो गया।

- मौलवी अहमदुल्ला जो मूलतः मद्रास के रहने वाले थे उन्होने अपना कार्यक्षेत्र फैजाबाद को बनाया और अंग्रेजों के विरुद्ध जिहाद घोषित किया और अंग्रेज इनसे इतने भयभीत थे कि इन पर 50,000 का इनाम घोषित किया

- कानपुर में विद्रोह के दौरान सती चौरा की घटना का उल्लेख आता है जिसमें यह कहा गया कि विद्रोहियों ने महिलाओं व बच्चों समेत 300 से अधिक अंग्रेजों को मार डाला।

यह विद्रोह विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न तरीकों से प्रसारित हुआ और अवध में तो यह आम जनता का विद्रोह बन गया इलाहबाद में विद्रोह का नेतृत्व किसी शासक या सामन्त ने नही बल्कि आम जनता के प्रतिनिधि लियाकत अली ने किया

असम में महीराम दत्त ने।

→ इस विद्रोह के दौरान राजाओं, नवाबों ने अंग्रेजों का साथ दिया और इसीलिए लॉर्ड कैनिंग ने उन्हें तूफान अवरोधक कहा, बड़े जमींदार भी शासन के साथ रहे, और नवोदित शिक्षित मध्य वर्ग तटस्थ रहा क्योंकि वह प्रगतिशील नियमों की स्थापना का समर्थक था और विद्रोहियों को रूढ़िवादी मानता था।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR